बी.एच.आई.एम.-163 : भारत का इतिहास : 1707–1950
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BHIM-163**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.एम. -163/ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) ब्रितानी नीति को आकार देने में उपयोगितावाद की भूमिका पर चर्चा कीजिए। 20

2) राजा राम मोहन राय के विचारों पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) ब्रितानी शासन का क्या आर्थिक प्रभाव पड़ा? 10

4) असहयोग आंदोलन को निर्मित करने में गांधीजी की भूमिका पर चर्चा कीजिए। 10

5) भारत में संप्रदायवाद के उदय पर एक लेख लिखिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) स्थायी बंदोबस्त 6

7) 18वीं शताब्दी की बहस 6

8) राष्ट्रीय आंदोलन में नरमपंथी 6

9) ईश्वर चंद्र विद्यासागर 6

10) प्राच्यवाद 6

1) ब्रितानी नीति को आकार देने में उपयोगितावाद की भूमिका पर चर्चा कीजिए। 20

उत्तर

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में ब्रिटेन में उपयोगितावाद एक प्रभावशाली बौद्धिक धारा के रूप में सामने आया। जेरेमी बेंथम से जुड़ा इसका मूल विचार था कि शासन और कानून का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाए कि वे अधिक से अधिक लोगों के अधिकतम सुख और उपयोग को कितना बढ़ाते हैं। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के विस्तार के साथ यह विचार प्रशासन, कानून, शिक्षा और सामाजिक सुधार से संबंधित कई नीतियों पर असर डालने लगा। उपयोगितावाद ने ब्रितानी शासकों को यह विश्वास दिया कि भारतीय समाज और संस्थाओं को केवल परंपरा के आधार पर नहीं, बल्कि तर्क, उपयोगिता, एकरूपता और प्रशासनिक दक्षता के आधार पर बदला जा सकता है।

उपयोगितावादी विचार और भारत

जेम्स मिल उपयोगितावादी विचारधारा के प्रमुख व्यक्तियों में थे। उनकी रचना 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' में भारतीय सभ्यता और परंपरागत संस्थाओं की तीखी आलोचना की गई। वे मानते थे कि भारत में प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाएँ प्रगति के अनुकूल नहीं हैं और एक केंद्रीकृत, तर्कसंगत तथा नियम-आधारित शासन की आवश्यकता है। ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक व्यवस्था में काम करने वाले कई अधिकारी इस सोच से प्रभावित हुए। इसके कारण वह पुरानी नीति कमजोर हुई जिसमें अंग्रेज शासक भारतीय कानूनों, भाषाओं और प्रथाओं को यथासंभव बनाए रखने का प्रयास करते थे।

उपयोगितावाद ने यह धारणा मजबूत की कि राज्य केवल राजस्व वसूलने और शांति बनाए रखने वाला तंत्र नहीं है, बल्कि वह समाज को 'सुधारने' का साधन भी बन सकता है। इसी सोच ने प्रशासन को अधिक हस्तक्षेपकारी बनाया। हालांकि भारत में हुए सभी सुधार केवल उपयोगितावाद का परिणाम नहीं थे। ईसाई मिशनरियों, मानवीय सुधारवादियों और भारतीय समाज-सुधारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान था।